Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
January to March 2026, E-Journal, Vol. I, Issue LIII (53), ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

सी एम राइज विद्यालयों में शिक्षकों की कार्यशैली एवं उसकी प्रभावशीलता का समीक्षात्मक अध्ययन

डॉ. ज्योति मैवाल* ज्योति जैन**

* प्राचार्य एवं मार्गदर्शक, प्रशांति कॉलेज ऑफ एजुकेशन, उज्जैन (म.प्र.) भारत
** शोधार्थी, शिक्षा संस्थान, सम्राट विक्रमादित्य विश्वविद्यालय,उज्जैन (म.प्र.) भारत

शोध सारांश – प्रस्तुत शोध में सी एम राइज विधालयों में शिक्षकों की कार्यशैली एवं उसकी प्रभावशीलता का समीक्षात्मक अध्ययन किया गया है।प्रस्तुत शोध अध्ययन के लिए शोधार्थी द्वारा मध्यप्रदेश के मन्दसौर जिले के 03 सी एम राइज विद्यालय के 90 शिक्षकों को न्यादर्श के रूप में लिया गया।इस शोध कार्य हेतु सर्वेक्षण विधि का उपयोग कर प्रदत्ता संग्रह कार्य किया गया।शोध परिणामों से पता चला है कि इन विद्यालयों के शिक्षकों की कार्यशैली व्यवसायिक रूप से उत्तम है शिक्षक सदैव व्यावसायिक विकास एवं प्रशिक्षण कार्य में रुचि रखते हैं, जिससे इनका शिक्षण कार्य प्रभावशील होकर विद्यार्थियों के शैक्षिक विकास एवं समग्र विकास में योगदान प्रदान करता है।

प्रस्तावना – शिक्षा किसी भी राष्ट्र के भविष्य को आकार देने में एक महत्वपूर्ण घटक है और भारत अपनी विविध संस्कृति और विशाल जनसंख्या के साथ गुणवत्तापूर्ण स्कूली शिक्षा प्रदान करने के लिए महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन कर रहा है।देश में स्कूलों का एक व्यापक नेटवर्क है, जिसमें सार्वजनिक अर्थात् सरकारी और निजी दोनों प्रकार के विद्यालय शामिल है, जो कि शिक्षा के क्षेत्र में कदम–से–कदम मिलाकर चल रहे है।आज भारत देश की शासकीय संस्थाएँ निजी विद्यालयों के समान शिक्षा प्रदान कर रही है, क्योंकि भारत के कुल विद्यालयों में से 68.7 प्रतिशत विद्यालय शासकीय व शेष 31.3 प्रतिशत विद्यालय निजी है।इतनी अधिक संख्या में शासकीय विद्यालय होने से भारत की शासन व्यवस्था ने इन विद्यालयों को सर्व सुविधायुक्त बनाने व गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करने हेतु कई तरह के विद्यालयों का निर्माण किया है तथा इन विद्यालयों में पूर्ण प्रशिक्षित शिक्षकों की नियुक्ति भी करवाई है।इन विद्यालयों में वर्तमान में कक्षा 9वीं से 12वीं तक की कक्षाएँ संचालित की जा रही है।

सी एम राइज विद्यालय – सी एम राइज योजना की शुरूआत म.प्र.शासन द्वारा की गई है। इस योजना के तहत स्कूली शिक्षा में नवीन संशोधन का समावेश, आधुनिकीकरण, बच्चों का सर्वांगीण विकास, स्कूलों की संरचना में व्यापक सुधार, बच्चों की शिक्षा एवं अन्य गतिविधियों में जागरूकता बढ़ाना आदि कार्य किए जाएंगे। इस योजना के माध्यम से सरकार द्वारा 9200 स्कूलों की स्थापना की जाएगी।बच्चों की शिक्षा बेहतर करने के लिए कक्षाएँ प्री–नर्सरी से लेकर हायर सेकेण्डरी तक संचालित की जाएगी।इन विद्यालयों में हिन्दी एवं अंग्रेजी दोनों माध्यम में शिक्षा दी जाएगी।स्कूलों की स्थापना के साथ–साथ शिक्षकों को प्रशिक्षण देकर नवीन शिक्षक भर्तियों को भी सम्पन्न किया जाएगा।यह योजना सर्वप्रथम सन् 2021 में लागू की गई।

यह म.प्र. शासन की एक नवीन विद्यालयी योजना है।इस योजना के तहत 3 स्तरों पर विद्यालय खोले गए है, व आगे भी खोले जाऐंगे।यह स्तर जिला, तहसील व गाँव स्तर है।विकासखण्ड स्तर पर कुल 25 लगभग विद्यालय होंगे, प्रत्येक विद्यालय में 1500 से 2000 विद्यार्थी शिक्षा ग्रहण कर सकेंगे।प्रथम सी एम राइज विद्यालय शाजापुर जिले के गुलाना में निर्मित हुआ है। जिसका शुभारम्भ तत्कालीन मुख्यमंत्री, म.प्र. शासन के माननीय शिवराज सिंह चौहान व तात्कालिक शिक्षा मंत्री, म.प्र.शासन के माननीय इन्दरसिंह परमार द्वारा किया गया था।यह सभी विद्यालय विद्यार्थियों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करने व उनके सर्वांगीण विकास को दृष्टिगत रखकर खोले जा रहे है, जो पढ़ाई और सुविधाओं के मामले में नामचीन निजी विद्यालयों को टक्कर देंगे। इनमें बच्चों के लिए परिवहन सुविधा, खेलकूद, संगीत, तैराकी से लेकर तमाम तरह की सुविधाएँ होगी।उनमें वैज्ञानिक प्रवृत्ति विकसित करने के लिए विभिन्न प्रयोगशालाएँ भी संचालित की जाएगी।यह सभी विद्यालय सर्वसुविधा युक्त बनाए जा रहे है, जहाँ एक ही छत के नीचे सभी बच्चों को हर प्रकार की सुविधाएँ प्रदान की जा सके।शिक्षा के स्तर को देखा जाए तो यहाँ विद्यार्थी कला, वाणिज्य, विज्ञान, गणित के साथ–साथ कृषि, हार्टिकल्चर, पशुपालन जैसे व्यवसायिक विषय का अध्ययन भी कर सकेंगे।साथ–साथ वे संगीत, खेलकूद आदि माध्यम से अपने मानसिक व शारीरिक स्वास्थ्य को भी बनाने में सक्षम होंगे।इन विद्यालयों में प्रशिक्षित शिक्षकों की नियुक्तियाँ परीक्षा के माध्यम से व साक्षात्कार द्वारा की गई है, ताकि शिक्षा के साथ विद्यार्थियों को अच्छे शिक्षक मिल सके।आने वाले समय में इन शिक्षकों हेतु विद्यालय परिसर में ही इनके आवास की सुविधाएँ प्रदान करवाए जाने का लक्ष्य है, ताकि वे वही रहकर अपना पूरा ध्यान विद्यार्थियों के उज्ज्वल भविष्य निर्माण में कर सके।हर 15–20 K.m. की दूरी में एक सी एम राइज विद्यालय खोले जाकर आस–पास के विद्यार्थियों को आने–जाने हेतु परिवहन सुविधा प्रदान की जाएगी।ताकि व आसानी से विद्यालय आ सके।

इन विद्यालयों को निर्मित करने का मुख्य उद्देश्य इस प्रकार है:

1. विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास हेतु कला, संगीत, खेलकूद आदि की सुविधा उपलब्ध कराना।
2. विद्यार्थियों को व्यवसायिक शिक्षा प्रदान करना।

3. विद्यार्थियों को अंग्रेजी माध्यम से शिक्षा प्राप्त करने की सुविधा प्रदान करना।
4. विद्यार्थियों में सामाजिक गुणों व राष्ट्रीय भावना का विकास करना।
5. विद्यार्थियों में 21वीं सदी के कौशलों को विकसित करना।
6. विद्यार्थियों को आनन्दमयी वातावरण उपलब्ध करवाना।

इस तरह यह विद्यालय समस्त प्रकार के भौतिक संसाधनों से सम्पन्न रहेंगे व यहाँ पढ़ाने वाले शिक्षक भी पुन: परीक्षा देने के बाद ही नियुक्त किए जाते है।क्योंकि विद्यार्थियों में अन्तर्निहित शक्तियों का विकास कर छात्रों को नैतिक, सामाजिक और आध्यात्मिक रूप से गढ़ने में शिक्षक का योगदान एक शिल्पकार की तरह होता है।एक शिक्षक ही बच्चों को अपनी ज्ञानरूपी गंगा में स्नान कराकर अच्छा नागरिक बनाने की दिशा में प्रयास करता है।शिक्षक ही बालकों की योग्यता, क्षमता, रूचि, अभिरूचि आदि के अनुसार शिक्षा प्रदान करता है।शिक्षक ही छात्र की आंतरिक शक्तियों के विकास में मदद करता है, जिनसे छात्र स्वयं भी परिचित नहीं है।जब शिक्षक सुविधा प्रदाता के रूप में होता है, तो कक्षा में छात्रों के व्यक्तित्व विकास में उन्नयन वृद्धि होती है।शिक्षक ही बदलते समाज व आवश्यकताओं के अनुसार छात्रों को शिक्षा प्रदान कर उन्हें जीवनयापन हेतु तैयार करता है।

किसी भी राष्ट्र के निर्माण की रीढ़ उस राष्ट्र की शिक्षा व्यवस्था पर होती है एवं इस शिक्षा व्यवस्था का आधार स्तम्भ एक शिक्षक ही होता है। शिक्षा को प्रभावी तथा समिचीन बनाने हेतु शिक्षा व्यवस्था में आवश्यकता अनुसार प्रयास एवं परिवर्तन होते आये हैं, उन्हीं प्रयासों के फलस्वरूप शिक्षा के अन्तर्गत सी एम राइज विद्यालयों को स्थापित किया जा रहा है, क्योंकि शिक्षा तन्त्र में नवाचारी तकनीकी क्षमताओं एवं उपलब्धियों को प्राप्त करना ही इसका मुख्य उद्देश्य है।

क्योंकि हमें ऐसे विद्यार्थियों को तैयार करना है जो 'किसी मकसद के लिए खड़े हो तो एक पेड़ की तरह और गिरो तो बीज की तरह ताकि दूसरा उगकर उसी मकसद के लिए जंग कर सको।' -स्वामी विवेकानन्द

प्रस्तावित शोध में मध्यप्रदेश शासन की सी एम राइज विद्यालयों में शिक्षको की कार्यशैली एवं उसकी प्रभावशीलता का समीक्षात्मक अध्ययन करने का प्रयास किया गया।

अध्ययन की आवश्यकता और महत्व – वर्तमान स्थिति को देखा जाए तो म.प्र.में शिक्षा का स्तर दिन-प्रतिदिन गिरता जा रहा है।वही प्रायवेट एवं केन्द्रीय विद्यालयों में शिक्षा का स्तर बढ़ रहा है।विद्यालयों से विद्यार्थी ड्राप आउट हो रहे हैं।यह एक चिंतन का विषय है।अत: इस पर अध्ययन की आवश्यकता है।हमारे प्रदेश में आज भी शिक्षा का स्तर निम्न है।राज्य के सरकारी स्कूल सीबीएससी, आईसीएससी, स्कूलों की बराबरी नहीं कर पाते है।सी एम राइज स्कूल योजनाका मुख्य उद्देश्य यह है कि इन विद्यालयों को निजी विद्यालयों के समक्ष लाकर शिक्षा की गुणवत्ता में वृद्धि की जाए।

मुख्य शब्द – सी एम राइज विद्यालय, शिक्षकों की कार्यशैली, प्रभावशीलता।

शिक्षकों की कार्यशैली – शिक्षकों की कार्यशैली से आशय उनके पेशेवर विकास जिसमे वे निरन्तर प्रशिक्षण कार्यक्रम में भाग लेते है, जैसे दीक्षा पोर्टल पर प्रशिक्षण प्राप्त करना व अन्य शैक्षिक प्रशिक्षण प्राप्त करना व पढ़ाने के तरीके जिसमें शिक्षक पुस्तक व डिजीटल प्लेटफोर्म, स्मार्ट बोर्ड आदि का सहयोग लेकर अध्यापन कार्य सम्पन करवातेहैं।इसके साथ ही उनका समग्र कार्य व्यवहार व शाला समय में किए जाने वाली समस्त कार्य सम्मिलित है।

प्रभावशीलता – प्रभावशीलता से आशय इन विद्यालयों में शिक्षकों द्वारा किए जाने वाले कार्यों का क्या प्रभाव होता है व उन कार्यों के क्या आउटपुट प्राप्त होते है।

समस्या कथन – 'सी एम राइज विद्यालयों में शिक्षकों की कार्यशैली एवं उसकी प्रभावशीलता का समीक्षात्मक अध्ययन।'

संबंधित शोध अध्ययन – गुप्ता, राजेन्द्र कुमार (2014) नेशिक्षकों की शिक्षण गुणवत्ता का उनकी व्यावसायिक प्रतिबद्धता, कार्य संतुष्टि एवं सम्प्रेषण के परिप्रेक्ष्य में अध्ययन किया एवं पाया कि शिक्षक में जैसे-जैसे व्यावसायिक प्रतिबद्धता बढती जाती है।वैसे-वैसे उनकी शिक्षण की गुणवत्ता का विकास होता जाता है।

गुप्ता, भारतप्रसाद (2021) ने मॉडल स्कूल की प्रभावशीलता के सन्दर्भ में शिक्षकों की शैक्षिक अभिवृत्ति एवं सामुदायिक सहभागिता का तुलनात्मक अध्ययन किया हैव पाया कि शिक्षाको की शैक्षिक अभिवृत्ति व सामुदायिक सहभागिता का स्तर औसतहै।

शोध के उद्देश्य:

1. सी एम राइज विद्यालयों में शिक्षकों की कार्यशैली का अध्ययन करना।
2. शिक्षकों के व्यावसायिक विकास और प्रशिक्षण की प्रभावशीलता का अध्ययन करना।
3. शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता का अध्ययन करना।

परिकल्पना:

1. सी एम राइज विद्यालयों में शिक्षकों की कार्यशैली का प्रभाव परिलक्षित नहीं होता है।
2. शिक्षकों के व्यावसायिक विकास व प्रशिक्षण की प्रभावशीलता परिलक्षित नहीं होती।
3. शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता परिलक्षित नहीं होती।

प्रविधि – प्रस्तुत शोध हेतु सर्वेक्षणात्मक विधि को अपनाया गया।

न्यादर्श – प्रस्तुत शोध के लिए म.प्र.के मन्दसौर जिले के 03 सी एम राइज विद्यालय के 90 शिक्षकों को न्यादर्श के रूप में लिया गया।

चर

स्वतंत्र चर – सी एम राइज विद्यालय

आश्रित चर – कार्यशैली, प्रभावशीलता

प्रदत्त संकलन – प्रस्तुत शोध में प्रदत्त संकलन साक्षात्कार के माध्यम से किया गया।

प्रदत्त विश्लेषण व परिणाम

परिकल्पना 01- सी एम राइज विद्यालयों में शिक्षको की कार्य शैली का प्रभाव परिलक्षित नहीं होता।

प्रथम परिकल्पना सम्बंधित प्राप्त अभिमतों से पता चलता है कि शिक्षकों में बेहतर शिक्षण करने का उत्साह पाया गया व अधिक सक्रीय रूप से विद्यार्थियों को केंद्र में रखकर शिक्षण कार्य कर रहे हैं वे और अधिक अनुशाषित व समय पर कार्य करने तथा परिणाम प्रदान करने हेतु निरन्तर प्रयासरत रहते है वे शैक्षिक कार्य के अलावा अन्य कार्यों में भी पूर्ण भागिदारी निभाते है।

परिकल्पना 02- शिक्षको के व्यावसायिक विकास और प्रशिक्षण की प्रभावशीलता परिलक्षित नहीं होती।

द्वितीय परिकल्पना से संबंधित प्राप्त अभिमतों से पत्ता चलता है कि

शिक्षकों में अपने अनुभव साझा करने की प्रवृत्ति विकसीत हुई है एवं वे दीक्षा पोर्टल से प्रशिक्षण प्राप्त कर उसका उपयोग अपनी व्यावसायिकता हेतु करते है

परिकल्पना 03 – शिक्षको की शिक्षण प्रभावशीलता परिलक्षित नहीं होती।

तृतीय परिकल्पना से संबंधित प्राप्त अभिमतों से पता चलता है कि शिक्षक आधुनिक शिक्षण विधियों का उपयोग कर रहे है साथ ही डिजीटल रूप से शिक्षण कार्य को कर रहे है।शिक्षक छात्रों की भागीदारी को भी प्रोत्साहित कर रहे हैं, जिससे रटने के बजाय समझने पर बल दिया जा रहा है।

निष्कर्ष – प्रस्तुत शोध से प्राप्त परिणाम से निष्कर्ष रूप में कह सकते है कि–

(I) सी एम राइज विद्यालयों में शिक्षकों की कार्यशैली का प्रभाव सार्थक रूप से परिलक्षित होता है।

(II) शिक्षकों के व्यावसायिक विकास और प्रशिक्षण की प्रभावशीलता सार्थक रूप से परिलक्षित होती है।

(III) शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता परिलक्षित होती है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :–

1. श्रीवास्तव, डी. एन., 'अनुसंधान विधियाँ', साहित्य प्रकाशन, आगरा।
2. वालिया, जे.एस., 'शिक्षा तकनीकी', पाल पब्लिकेशन, जालंधर।
3. मदान, पूनम,'उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षक', अग्रवाल पब्लिकेशन्स, आगरा।
4. 'सी एम राइज स्कूल शिक्षक हैण्डबुक', स्कूल शिक्षा विभाग, म.प्र.।
5. राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2020

****